मीना की दुनिया – रेडियो कार्यक्रम

शिक्षक संदर्शिका

(कक्षा 6, 7 व 8 हेतु)

आमुख

रेडियो एक लोकप्रिय एवं कम खर्चीला माध्यम है जिससे स्कूलों में बच्चों को मनोरंजक ढंग से पढ़ाया व सिखाया जा सकता है। "मीना की दुनिया" रेडियो कार्यक्रम विशेषतया जूनियर हाई स्कूल के बच्चों के लिए बनाया गया है। यह कार्यक्रम यूनिसेफ की सहायता से उत्तर प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा विकसित किया गया है।

बच्चों के अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा लिंग के आधार पर बालक–बालिका में समानता के उद्देश्य से यूनिसेफ द्वारा "मीना" का पहला कदम 1990 में विकसित किया गया। उत्तर प्रदेश में "मीना" की प्रसिद्धि नई ऊँचाइयों पर तब पहुँची जब राज्य के शिक्षा विभाग ने 36,022 मीना मंचों की स्थापना उच्च प्राथमिक विद्यालयों में की। मीना की प्रत्येक कहानी मनोरंजक एवं रोचक होने के साथ–2 बच्चों के अधिकार, लिंग समानता तथा बालमित्रशाला पर आधारित मुद्दों को समाहित किये हुए है।

"मीना की दुनिया" की प्रत्येक उपकथा 15 मिनट की है तथा ये कुल 160 एपिसोड की श्रृंखला है जिसका प्रसारण आल इंडिया रेडियो से प्रत्येक सोमवार से शनिवार (अवकाश छोड़कर) को दोपहर 12.30 से 12.45 तक किया जा रहा है।

अपेक्षा है कि "मीना की दुनिया" कार्यक्रम सफलता की ऊँचाइयों को छुएगा तथा देश के भावी नागरिक पूर्णतया अपने अधिकारों के साथ कर्त्तव्यों के प्रति भी समर्पित होंगे।

शुभकामनाओं सहित आपको सकारात्मक सुझाव आमंत्रित हैं।

अनुक्रमिका

क्रमांक	अनुभाग	विषय वस्तु	पृष्ठ सख्या
		आमुख	
1	**प्रथम भाग**	**परिचय (मीना मंच)**	
		शिक्षकों के लिए मार्गदर्शिका तथा उसका प्रयोग	5
		मीना के संवाद की पहल	9
		"मीना" रेडियो कार्यक्रम और उसके उद्देश्य	10
2	**द्वितीय भाग**	**"मीना की दुनिया" कार्यक्रम का रेडियो प्रसारण**	
		मीना कार्यक्रम की रूपरेखा	12
		रेडियो प्रसारण के पहले, दौरान व बाद में क्या करना है	12
		शिक्षकों के सुझाव	21
3	**तृतीय भाग**	**कार्यवाही (क्रियाविधि)**	
		पूर्वावलोकन और पुनरावृत्ति के लिए गतिविधियों का सुझाव	23
		बच्चे (विद्यार्थी)	23
		अभिभावक और समाज (समुदाय)	25
4	**चतुर्थ भाग**	**शिक्षा द्वारा विकसित किये जाने वाले आवश्यक जीवन कौशल**	28
	गतिविधियाँ	**सामाजिक पहचान**	30

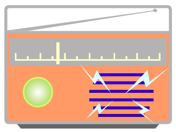

प्रथम भाग

परिचय

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शिका

आप जैसे शिक्षकों को मीना के संवाद की पहल के बारे में जानकारी देने के लिये ये मार्गदर्शिका प्रस्तुत की गयी है।

कार्यक्रम को क्रिया–प्रतिक्रिया द्वारा आगे बढ़ाने की विचारधारा से प्रस्तुत किया गया है ताकि कार्यक्रम को पुनःस्मरण कर संदेश को अपने मित्रों और परिवार के सदस्यों तक पहुँचाकर विचार–विमर्श कर सकें।

इस कार्यक्रम के द्वारा अभिभावकों और समाज के सदस्यों में बच्चों के प्रति विचार और व्यवहार में बदलाव की प्रेरणा भी दी जा सकती है–विशेषकर लड़कियों के प्रति व्यवहार में।

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शिका को प्रयोग में लाने का तरीका

मीना की दुनिया कार्यक्रम के रेडियो प्रसारण के पहले, प्रसारण के दौरान और प्रसारण के बाद में आपकी भूमिका और ज़िम्मेदारी को समझने में ये मार्गदर्शिका सहायता करती है।

मीना कार्यक्रम के प्रसारण में उठाए गए विभिन्न मुद्दों पर विचार–विमर्श और गतिविधियाँ शुरू करने में इससे सहायता मिलती है।

प्रस्तुत जानकारी सरल है–समझने में आसान है।

एक शिक्षक की हैसियत से इस कार्यक्रम का सारांश और दिए गए उदाहरण (दृष्टांत) से आप परिचित होकर रेडियो कार्यक्रम के प्रसारण समय के लिये अपने आप को तैयार (सुसज्जित) कर लें उदाहरणार्थ: बच्चों को मीना की कहानियाँ कैसे सिखाएंगे? किस तरह के सवाल पूछेंगे?

यहाँ प्रस्तुत जानकारी में शिक्षक की हैसियत से आप अपने अनुभवों को जोड़ कर इसका रूपांतर कर सकते हैं–अधिक अनुकूल बना सकते हैं।

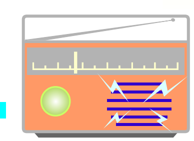

मीना मंच–पृष्ठभूमि

किसी भी राष्ट्र के विकास का प्रमुख आधार वहाँ की शिक्षा तथा कुशल जनशक्ति होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में शिक्षा के सार्वभौमीकरण की दिशा में बहुत प्रयास किये गये लेकिन आज भी भारत की कुल साक्षरता 65.38 प्रतिशत है जिसमें महिलाओं की साक्षरता 57.36 प्रतिशत ही है। क्योंकि आज भी बालिका शिक्षा के मार्ग में अनेक बाधाएँ देखने को मिलती हैं, जैसे–

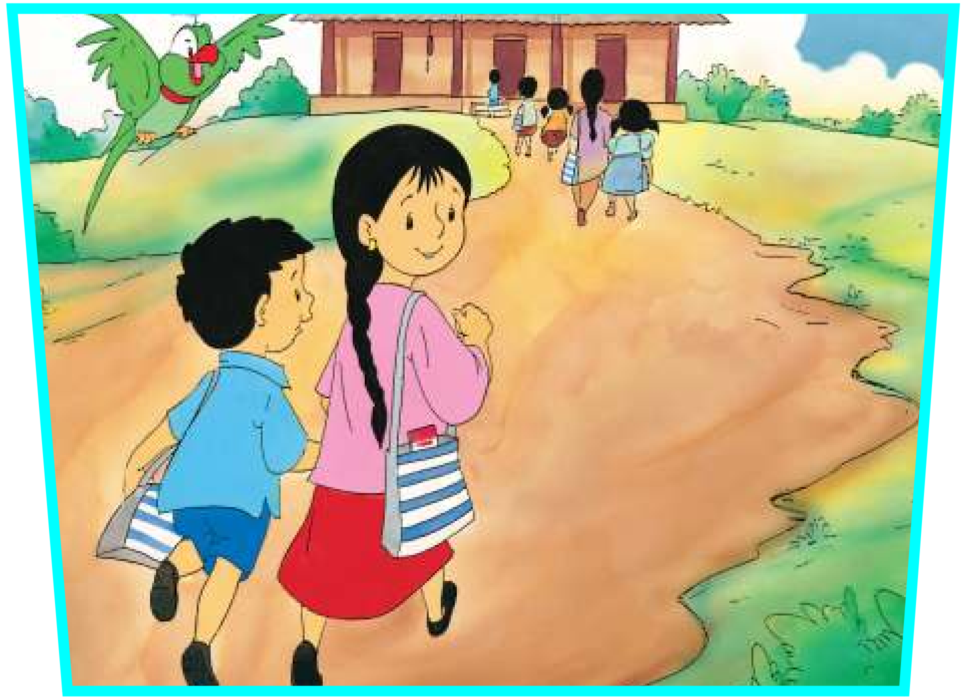

बालिका शिक्षा के मार्ग की बाधाएँ

- लिंग भेद
- रूढ़िवादिता
- बाल विवाह
- घरेलू कार्यों का बोझ
- बालिकाओं का संकोची स्वभाव
- प्रोत्साहन की कमी
- असुरक्षा की भावना
- बड़ा परिवार

उक्त बाधाओं के निवारण और बालिकाओं के विद्यालय में नामांकन और ठहराव को बढ़ाने के लिये जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम से आच्छादित जनपदों में मीना कैम्पेन की शुरुआत की गयी। जिसमें "मीना" को लेकर समुदाय में चर्चा की गयी। परन्तु जल्दी

ही यह महसूस किया गया कि यदि हमें बालिका के सम्पूर्ण सशक्तिकरण की बात करनी है तो हमें लिंग–भेद दूर करने और बालिकाओं के प्रति समुदाय के दृष्टिकोण को बदलने की पहल करनी होगी। साथ ही यह भी महसूस किया गया कि सीधे किशोरियों से इन मुद्दों पर बात करना अधिक प्रभावशाली होगा। इस उद्देश्य से उच्च प्राथमिक विद्यालयों में "किशोरियों का समूह" "मीना मंच" के गठन करने का निर्णय लिया गया।

मीना मंच की संकल्पना–"मीना मंच" 11 से 18 वय वर्ग की स्कूल जाने वाली और स्कूल न जाने वाली बालिकाओं का ऐसा समूह है जो किशोरी बालिकाओं को अभिव्यक्ति का अवसर देता है।

कार्यकारिणी

1. अध्यक्ष
2. सचिव
3. कोषाध्यक्ष
4. प्रेरक सदस्य
5. सक्रिय सदस्य

मीना मंच के अन्तर्गत समितियाँ

1. अनुशासन समिति
2. स्वच्छता समिति
3. प्रार्थना समिति
4. पुस्तकालय समिति
5. सांस्कृतिक समिति

मीना मंच के उद्देश्य

- अभिव्यक्ति क्षमता में वृद्धि
- बालिकाओं को स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति जागरूक बनाना
- बालिकाओं में जीवन कौशल का विकास करना
- बालिकाओं को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना
- बालिकाओं में नेतृत्व क्षमता का विकास करना
- बालिकाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाना
- बालिकाओं को ज़िम्मेदारी का अहसास कराना

मीना मंच का सफ़र – शुरुआत में प्रति जनपद दस कुल 700 मीना मंच गठित हुए। प्रत्येक मंच को मीना की कहानियों का सेट उपलब्ध कराया गया और स्कूल तथा गाँव स्तरीय स्थानीय गतिविधियों में मीना मंच की सहभागिता ली जाने लगी। वर्तमान में उत्तर प्रदेश में कुल 36,022 मीना मंच हैं प्रत्येक मंच के पास किट है। उन्हें सुलभ सहयोग देने के लिये अध्यापिकाओं को प्रशिक्षित किया गया। इस वर्ष 5,766 नये मीना मंच गठित करने का लक्ष्य रखा गया है।

मीना किट के अन्तर्गत उपलब्ध करायी गयी प्रत्येक कहानी विनोद और मनोरंजन के साथ शिक्षा, लड़के–लड़की में भेदभाव, आहार पोषण, स्वास्थ्य जैसी समस्याओं और मुद्दों पर संदेश भी देती है।

मीना के बारे में जानकारी पाने की वजह से बच्चों में भी आत्मविश्वास के साथ समस्याओं को सुलझाने की क्षमता, अभिव्यक्ति की क्षमता तथा रुकावटों को दूर करने की शक्ति का निर्माण होता है। मीना उनका आदर्श बन जाती है।

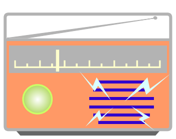

मीना के संवाद की पहल

सन 1990 में मीना के संवाद की पहल युनिसेफ (UNICEF) द्वारा शुरू की गई। उद्देश्य था – बच्चों के अधिकारों की जानकारी देना और लड़के–लड़कियों के बीच होने वाले भेदभाव को मिटाना (दूर करना)।

सन 2002 में उत्तर प्रदेश में मीना की लोकप्रियता ने नए शिखर छुए, उस समय राज्य शिक्षा विभाग ने शिक्षा अभियान के लिए 19,000 से भी ज़्यादा "मीना मंच" स्थापित किए। वर्तमान में उत्तर प्रदेश में कुल 36,022 मीना मंच हैं।

मीना है कौन?

मीना 9 साल की लड़की है जो अपने माता–पिता, दादी, भाई राजू और बहन रानी के साथ रहती है।

मीना की नस–नस में उमंग, उल्लास, सहानुभूति और सहायता का भाव है।

मिट्ठू तोता उसका सबसे प्यारा दोस्त है। मिट्ठू तोता उसे हर कार्य में मदद करता है।

मीना किसी भी आम लड़की की तरह है पर उसमें कुछ विशेषताएँ है, जैसेः वो सवाल पूछने में झिझकती नहीं है, कमजोर वर्ग के लिए आवाज उठाती है। दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील है। परिवार और मित्रों की समस्याओं को सुलझाने में तत्पर रहती है।

मीना बहुत प्यारा–सा, सबको लुभानेवाला पात्र है। वह जहाँ जाती है, लोग दिल से उका स्वागत करते हैं।

मीना स्कूल में आ कर आप और आपके विद्यार्थियों के साथ रहने को आतुर है।

रेडियो कार्यक्रम मीना की पहल

स्कूल के बच्चों तक पहुँचकर उन्हें मनोरंजन के साथ जानकारी और ज्ञान देने के लिए रेडियो कम खर्चीला, लोकप्रिय और प्रभावशाली माध्यम है।

स्कूल के बच्चों के लिए विशेष रूप से रेडियो कार्यक्रम "मीना की दुनिया" का निर्माण किया गया है।

उत्तर प्रदेश राज्य सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा युनिसेफ (UNICEF) की सहायता से इसे प्रस्तुत किया गया है।

"मीना की दुनिया" की हर घटना (प्रसंग, कथा) 15 मिनट लंबी है जिसका प्रसारण "ऑल इंडिया रेडियो" द्वारा सोमवार से शनिवार तक होना निश्चित किया गया है।

सभी सरकारी स्कूलों की समय सारिणी में यह समय इस कार्यक्रम के लिए तय किया गया है ताकि बच्चे कार्यक्रम सुन सकें और उस पर विचार–विमर्श कर सकें।

स्कूल में पढ़नेवाले "6 से 8 कक्षा के बच्चों" 11 से 14 साल के बच्चों को ध्यान में रखकर यह कार्यक्रम बनाया गया है। ये ही इस कार्यक्रम के प्रमुख श्रोतागण हैं।

अप्रत्यक्ष रूप में यह कार्यक्रम आप जैसे शिक्षक, अभिभावक, समाज के सदस्य जैसे स्कूल के संचालकगण, शिक्षा मित्र, समाज का नेतृत्व करने वाले लोग, पंचायत प्रधान वगैरह को भी प्रभावित करता है।

मीना की दुनिया के उद्देश्य

बच्चों, विशेषकर लड़कियों की सामर्थ्य बढ़ाने–उन्हें शक्ति संपन्न बनाने के लिए "मीना की दुनिया" कार्यक्रम का निर्माण किया गया है ताकि वे खुद का महत्त्व, खुद की क्षमता समझकर खुद की और अन्य लोगों की मदद कर सके। जैसेः मीना मंच की वे लड़कियाँ

जो अनुभवी सदस्य हैं वे नई लड़कियों को सदस्य बनाने व उनकी उपस्थिति सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी लेती हैं।

कार्यक्रम के घटक तीन प्रमुख मुधों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। बच्चों के अधिकार, लड़के–लड़की में समानता और स्कूल को बच्चों का मित्र जैसा बनाना।

✦ **बच्चों के अधिकारः** हर बच्चे को मौलिक अधिकार है कि वो प्रगति कर सके, अपना संपूर्ण विकास कर सके।
उदाहरणार्थः जीवन, प्रगति विकास और सुरक्षा का अधिकार।

✦ **लड़के–लड़की में समानताः** शिक्षा, आहार–पोषण, खेलकूद और काम के बँटवारे में समानता।

✦ **स्कूल जो मित्र जैसा लगे (बाल मित्र स्कूल):** स्कूल में ऐसा वातावरण बनाएँ जहाँ बच्चों के स्वास्थ्य, आहार–पोषण, और मानसिक स्वास्थ्य पर पूरा ध्यान दिया जा सके। मीना की कहानियाँ ऐसी हैं जो बच्चों की समस्याओं को हल करने की प्रेरणा देती हैं, सही दिशा में पैनी सोच द्वारा निर्णय लेने की क्षमता देती हैं, सुसंवाद और बातचीत की कला सिखाती हैं, मोलतोल सिखाती है और भावनाओं व तनाव को नियंत्रण में रखना, खुद का मूल्यांकन कर पाना, विवाद को नियंत्रण में रखना–सुलझाना भी सिखाती हैं। रिश्तों को बनाए रखने–विकसित करने के लिए प्रेरणा देती हैं जैसे दूसरों की मदद करने के लिए तत्पर रहना।

(अधिक जानकारी के लिए संलग्न जीवन कौशल की मूलभूत जानकारी पढ़ें)

"मीना की दुनिया" का प्रसारण

मीना कार्यक्रम के प्रसारण के पहले, प्रसारण के समय और प्रसारण के बाद शिक्षक (आप) की क्या भूमिका है—क्या ज़िम्मेदारी है इसकी मूलभूत जानकारी इस विभाग में दी गयी है।

मीना रेडियो कार्यक्रम की संपूर्ण रूपरेखा:

"मीना की दुनिया" की हर घटना में तीन प्रमुख कड़ी हैं जिन्हें सूत्रधार विवरण, समीक्षा या टिप्पणी द्वारा जोड़ा गया है।

- पहली कड़ी मीना की कहानी से जुड़ती है।
- दूसरी कड़ी आसानी से गुनगुना सकें ऐसे गीत से जुड़ती है।
- तीसरी कड़ी खेल, पहेली या प्रश्नावली से जुड़ती है।

यह ध्यान रखा गया है कि कहानी में जिस विषय को उजागर किया गया है (उभारा है) उसे ही गीत में और खेल में भी दोहराया गया है। मतलब संदेश तीनों कड़ी में कहा गया है।

यदि "मीना की दुनिया" के लिए 40 मिनट का सत्र तय किया गया है तो उसे इस तरह विभाजित किया जा सकता है।

- कक्षा और विद्यार्थियों को तैयार करने के लिए 5 मिनट
- रेडियो कार्यक्रम सुनने के लिए 15 मिनट
- विद्यार्थियों के साथ क्रिया—प्रतिक्रिया और विचार—विमर्श के लिए 20 मिनट

कार्यक्रम के प्रसारण के पहले क्या करना है? (5 मिनट)

सुनने का मतलब केवल शब्दों का कानों पर पड़ना ही नहीं है। बच्चों में कार्यक्रम सुनने के लिए सतर्कता और एकाग्रता नितांत आवश्यक है ताकि जो कहा जा रहा है उसे वे समझ सकें। ये तभी संभव है जब कक्षा का वातावरण इसमें सहायक बने। शिक्षक की हैसियत से आप सही वातावरण के लिए निम्नांकित कार्य कर सकते हैं।

1. कक्षा के वातावरण एवं आवश्यकताओं को एक बार जाँच लें (निगरानी कर लें)

इसके लिए विद्यार्थियों को भी अलग–अलग ज़िम्मेदारी सौंपी जा सकती है।

- रेडियो सेट को सही जगह सुरक्षित रखा जाए, उसकी दुरुस्ती (रख–रखाव) पर ध्यान रखा जाए, ज़रूरत पड़ने पर बैटरी (सेल) आसानी से तुरन्त उपलब्ध हो सके ऐसी व्यवस्था करें। बैटरी (सेल) के लिए हिसाब रखा जाए तो और भी अच्छा है।
- कार्यक्रम के लिए सही जगह चुन लें–वहाँ मेज़ रख लें, बैटरी (सेल), पावर, रेडियो सेट को जाँच लें कि सब सही स्थिति में है।
- रेडियो के जिस स्टेशन (फ्रिक्वेन्सी) पर "मीना की दुनिया" कार्यक्रम प्रसारित होने वाला है वो स्टेशन (फ्रिक्वेन्सी) सेट कर लें।
- ध्वनि की स्पष्टता जाँच लें। ध्वनि का स्तर भी सेट कर लें।
- आवश्यक हो तो कक्षा का आयोजन बदला जा सकता है जैसे बच्चों की रेडियो सेट के आसपास बैठने की व्यवस्था कर लें।
- खिड़की दरवाज़े बन्द कर सकते हैं ताकि बाहरी शोरगुल कार्यक्रम में खलल न पहुँचाएँ परन्तु ध्यान रहे कक्षा में प्रकाश कम न हो जाए (अन्धेरा न हो) और खुली हवा मिलने में अड़चन न आए।
- तय की गई गतिविधियों के लिए कागज़, क्रेयॉन, चित्र वगैरह सभी आवश्यक सामग्री तैयार रखें।

2. अपने विद्यार्थियों को किसी भी तरह की रुकावट(बाधा) न आए और उनका ध्यान–प्रकार भंग न हो – इसके लिए उन्हें तैयार करें

- ❑ कार्यक्रम सुनने वाले विद्यार्थियों की संख्या कम ही रखें, ज़्यादा से ज़्यादा 50 तक।
- ❑ विद्यार्थियों से पूछें कि किसी को पानी पीना है–शौचालय जाना है–कार्यक्रम शुरू होने के पहले ये सब हो जाना चाहिए।

- आपकी विद्यार्थियों से क्या अपेक्षाएँ हैं ये उन्हें स्पष्ट करें जैसे अनुशासन, ध्यान से सुनना, विचार–विमर्श और चर्चा और गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल होना वगैरह (ध्यान रहे ये स्पष्ट करते वक्त उन्हें ऐसा महसूस न कराएँ जैसे वे कोई गंभीर परीक्षा देने जा रहे हैं)।
- उनका किसी भी तरह का सन्देह पहले ही दूर कर दें ताकि किसी भी प्रकार की गलतफहमी की आशंका न रहे।

3. कार्यक्रम की पूर्व प्रसारित घटनाओं की आप एक शिक्षक की हैसियत से पुनरावृत्ति करें (दोहराएँ)

इससे विद्यार्थियों में प्रसारित होने वाली घटना के बारे में उत्सुकता बनी रहेगी –कार्यक्रम सुनने के लिए वे तत्पर रहेंगे–कार्यक्रम से जुड़े रहेंगे।

पहले प्रसारित कार्यक्रम के बारे में विद्यार्थियों से मिनट–दो मिनट सवाल–जवाब करें। जैसेः कल की मीना की कहानी का विषय क्या था? इस कहानी का मुख्य सन्देश क्या था? क्या आपने इस घटना की चर्चा घर के सदस्यों के साथ की थी? चलो–अब आज की घटना सुनें–देखें–मीना अब क्या कहना चाहती है?

रेडियो कार्यक्रम सुनने पर बच्चों की कल्पना शक्ति रूप लेना शुरू करती है क्योंकि जो शब्द वे सुनते हैं–कल्पना से वो दृश्य में बदलते हैं।

रेडियो कार्यक्रम के प्रसारण के वक्त क्या करना है? (15 मिनट)

1. रेडियो कार्यक्रम का पुनःप्रसारण नहीं होता इसलिए आप और आपके विद्यार्थी कार्यक्रम को ध्यानपूर्वक सुनें

- मुख्य सन्देश, अनुभव, गीत के शब्द, धुन, कठिन शब्द आदि पर ध्यान दें–सूची बना लें।
- आप अपनी सूझबूझ से गतिविधियों में बदलाव लाकर उसे और बेहतर बना सकते हैं– नए–नए प्रश्न पूछ सकते हैं।

उदाहरणार्थः यदि किसी पहेली में विद्यार्थियों को सीखने के लिए तीन वस्तुओ की सूची बनानी है तो इन वस्तुओं में और किन–किन नामों को जोड़ा जा सकता है – ये भी पूछा जा सकता है।

2. शिक्षक की हैसियत से आप अनुशासन और एकाग्रता में कमी न आने दें

- इस स्थिति में आप कक्षा पर सतत् निगरानी बनाए रखें और समस्याओं का पूर्वानुमान कर सुलझाने के लिए तैयार रहें जैसे यदि दो विद्यार्थी आपस मे बातचीत कर रहे हैं तो शान्तिपूर्वक दोनों को अलग–अलग बिठाएँ, किसी लड़के का यदि ध्यान विचलित हो रहा है तो उसे आगे की पंक्ति में बिठाएँ वगैरह।
- विद्यार्थी अपने शिक्षक के व्यवहार पर विशेष ध्यान देते हैं इसलिए आपके शरीर की भाषा (शरीर के संकेत, चेहरे के हावभाव–बैठने के–खड़े रहने के तौर–तरीके) नकारात्मक ना लगने पाएँ। (आपकी एकाग्रता नहीं है– आप गुस्से में हैं या कार्यक्रम में आपकी दिलचस्पी नहीं है–ऐसा बिल्कुल नहीं लगना चाहिए)।

रेडियो कायक्रम के प्रसारण के बाद क्या करना है (20 मिनट)

सीखने की प्रक्रिया में आनन्द के साथ रुचि बनी रहे इसके लिए सत्र को क्रिया–प्रतिक्रिया द्वारा चलाया जाता है। मीना की कहानी में दिए गए सकारात्मक सन्देश को यहाँ प्रबलता मिलती है–मान्यता मिलती है। चर्चा और गतिविधियों की मदद से जीवन कौशल सीखने में सहायता मिलती है।

एक शिक्षक के रूप में आपके पास सत्र सन्चालन की पूर्व–निर्धारित योजना तैयार रहनी चाहिए जिसमें "मीना की कहानी" विभाग के बारे में सवाल–जवाब के लिए 5 मिनट का समय रखा हो। कहानी के मुख्य सन्देश और मुद्दों की चर्चा के लिए 7 से 8 मिनट और गतिविधियों के लिए (गीत, खेल या समूह कार्य) 6 से 7 मिनट का समय रखा हो।

यदि विद्यार्थी मानसिक रूप से इस प्रक्रिया में लिप्त (शामिल) नहीं होगा तो वह ठीक से सीख भी नहीं पाएगा। इसलिए शुरुआत इस तरह करें।

1. समझ और ज्ञान बढ़ाने के लिए सवाल–जवाब को बढ़ावा दें

- विद्यार्थियों से कहें कि वे कहानी को संक्षेप में सुनाएँ। इसे थोड़ा रोचक बनाने के लिए एक विद्यार्थी से कहानी शुरू करवाएँ–दूसरे विद्यार्थी को उसे आगे बढ़ाने के लिए कहें और श्रृंखला में एक के बाद एक विद्यार्थी द्वारा कहानी आगे बढ़ाते हुए अन्त तक पहुँचें।
- कहानी और कहानी के चरित्रों के बारे में गहराईपूर्वक जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करें जैसे: आपको इसमें कौनसा पात्र अच्छा लगा और क्यों? मदद करने के लिए मीना ने क्या किया? अन्त में क्या होता है? वगैरह।
- कुछ सवाल गीत और खेल के बारे मे करें जैसे: गीत की कौन सी पंक्ति उन्हें याद है? कौन सी पंक्ति गुनगुनाकर बताएंगे?

2. इसके बाद प्रसारित घटना के मुख्य सन्देश और मुद्दों पर वर्ग में चर्चा करें

- आपके विद्यार्थी इस विषय के बारे में क्या सोचते हैं क्या महसूस करते हैं – यहाँ से शुरुआत करें।
- क्या आप मानते हैं शिक्षा आवश्यक है? क्या लड़कियों को पढ़ाना ज़रूरी है? क्यों? क्या आप किन्हीं तीन पढ़े–लिखे नामी गिरामी (प्रसिद्ध) व्यक्तियों के नाम बता सकते हैं? आपका आदर्श व्यक्ति कौन है? इन जवाबों पर चर्चा करते हुए शिक्षा के महत्त्व को उजागर करें (सामने लाएँ)।

* उनके निजी अनुभवों को कहानी के सन्देश और मुद्दों के साथ भावनात्मक स्तर पर जोड़ने का प्रयास करें जैसे : शिक्षा से उन्हें और उनके परिवार को क्या लाभ हुआ (फ़ायदा हुआ)? अब इस सन्दर्भ को मीना गिनती जाती हैं (स्कूल में उसने सीखा है) जिससे उसने लाला (दुकानदार) की बदमाशी को पकड़ा (लाला, रानो के पिताजी को ठग रहा था)–इससे जोड़ें।

3. समस्या का हल न देकर विद्यार्थियों को स्वयं सोचने के लिए प्रेरित करें

* समस्या को अपनी सूझबूझ से–अपने ढंग से सुलझाने की हिमायत करें। किसी कठिन परिस्थिति को पेश करें जहाँ विद्यार्थी को स्वयं उस समस्या का हल बताना है जैसे : आपके मित्र की बहन स्कूल में पढ़ना चाहती है–आप उसकी किस तरह मदद करेंगे? उसके परिवार को किस तरह समझाएंगे – मनाएंगे?
* दूसरा तरीका ये है कि आप उन्हें किसी समस्या के तीन हल दें, उनमें से किसी एक बेहतरीन तरीके को चुनने के लिए कहें और चुनने का कारण बताने के लिए कहें जैसे:

  अमीता के माँ–बाप चाहते हैं कि सिर्फ़ अमीता के भाई शिक्षित बनें। पर किसलिए?

  अ) वे होशियार बनेंगे

  ब) वे परिवार की मदद कर पाएंगे

  क) लड़के और लड़कियों को शिक्षा का समान अधिकार है–ये उन्हें पता नहीं है
* वर्ग में वाद–विवाद का आयोजन करें। कक्षा को दो दल में बाँटें। किसी मुद्दे पर एक दल समर्थन करें और एक दल विरोध करें जैसे: लड़कियों को स्कूल जाना चाहिए या घर के काम में हाथ बँटाना चाहिए?

4. शिक्षक की हैसियत से आप उन्हें निर्णय लेने में मदद कर सकते हैं।

⌘ विद्यार्थी कुछ कहने की इच्छा रखते हैं तो आप उन्हें प्रोत्साहित करें– ध्यानपूर्वक उन्हें सुनें और उन्हें महसूस कराएँ कि आप हमारे लिए महत्त्वपूर्ण हैं।

⌘ आपको ये बात पता है और आप मानते हैं कि विद्यार्थी अलग है। बस– इसी को मानने की प्रेरणा सभी विद्यार्थियों को दें। जैसे: यदि किसी विद्यार्थी के कुछ कहने पर दूसरे विद्यार्थी हँसते हैं तो आप ध्यानपूर्वक उसकी बात सुनें और उसके प्रयास की प्रशंसा करें।

⌘ विद्यार्थी किस तरह कार्यक्रम में शामिल होते हैं–किस तरह अपनी भावना व्यक्त करते हैं–इस पर ध्यान दें। आप देखेंगे 2–3 विद्यार्थी इसमें शरीक नहीं हो रहे हैं। उनका ध्यान इसमें नहीं लग रहा है–इसको आप दर्ज करें (नोट कर लें) यदि ऐसा बार–बार होता है तो उस विद्यार्थी को आपकी विशेष निगरानी और सहायता की ज़रूरत है।

5. कम बोलने वाले या बोलने में झिझकने वाले विद्यार्थी को प्रोत्साहित करें

☐ शिक्षक की हैसियत से ऐसे विद्यार्थी को कक्षा में चर्चा के दौरान बातचीत कर, सरल सवाल पूछकर, किताब में से पढ़ने के लिए कहकर, छोटे–छोटे सरल काम देकर जैसे कक्षा की तैयारी के वक्त दरवाज़ा या खिड़की बन्द करने के लिए कहें। यदि इनसे लाभ न हो तो इसका वास्तविक कारण ढूंढने की कोशिश करें। कभी–कभार निजी कारणों से भी ऐसी समस्या होती है।

☐ किसी भी विद्यार्थी को दूसरे बच्चों के सामने "ये बहुत शर्मीला है" या इस तरह का अन्य कोई लेबल न लगाएँ। इससे उन्हें ज़्यादा परेशानी होगी और वे और ज़्यादा सहम जाएंगे और अपने आप में सिमट जाएंगे।

- शर्मीले विद्यार्थियों को ज़बर्दस्ती गतिविधियों में शामिल करने से भी फ़ायदा नहीं होगा, धीरे–धीरे उन्हें प्रोत्साहन दें–उनका आत्मविश्वास बढ़ाएँ। ये तब तक सतत जारी रखें जब तक वे आत्मविश्वास के साथ बड़ी ज़िम्मेदारियाँ लेनी शुरू न कर दें।
- शर्मीले और झिझक वाले विद्यार्थी को ऐसे आत्मविश्वास वाले विद्यार्थी के साथ बिठाएँ जो ज़िम्मेदारी समझता हो–सहानुभूति रखता हो। आपसी मेलजोल से ऐसे विद्यार्थी को आत्मविश्वास बढ़ाने में सहायता मिलेगी।

6. शिक्षक की हैसियत से आप विद्यार्थियों को रेडियो से प्रसारित "मीना की कहानी" की चर्चा अपने घर के अन्य सदस्यों के साथ भी करने की प्रेरणा दें

- विद्यार्थी को घर जाकर रेडियो पर प्रसारित मीना की घटना परिवार के सभी सदस्यों को सुनाने के लिए कहें। इससे माँ–बाप, भाई–बहन, दादा–दादी, नाना–नानी के बीच रिश्ते भी मज़बूत बनेंगे।
- पाठ्यक्रम की संपूर्णता के लिए उन्हें चाहिए कि वे मुख्य मुद्दों और सन्देश पर चर्चा करें–सवाल करें। उनके विचार और राय सुनें। समय बीतने पर, इसकी वजह से उनके व्यवहार विचार और मनोवृत्ति में भी बदलाव आएगा। उदाहरण के लिए, अपने माँ–बाप और दादा–दादी से पूछें कि सर्वशिक्षा अभियान के बारे में वे क्या सोचते हैं? लड़की को शिक्षित बनाने के बारे में उनकी राय क्या है? अगर आपके पड़ोसी के बच्चे स्कूल नहीं जाते तो क्या आप के अभिभावक उस पड़ोसी को शिक्षा के महत्त्व को समझाएंगे?
- विद्यार्थियों को यह भी बताएँ कि अपने घर के अनुभव को भी कक्षा में (वर्ग में) दूसरों के साथ बाँटें।
- इससे बच्चों में आत्मसम्मान बढ़ता है और परिवार की बातों में–घटनाओं में–निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए प्रोत्साहन मिलता है–आत्मविश्वास बढ़ता है।

7. शिक्षक की हैसियत से आप प्रवृत्तियों को बढ़ावा दें–सीखने की व्यवस्था क्रिया–प्रतिक्रियायुक्त बनाएँ

- वाद–विवाद, चर्चा, नाटक, खेल, पहेलियाँ, चित्र, पोस्टर वगैरह विद्यार्थी को सोचने और काम करने में आत्मनिर्भर बनाते हैं।
- आप अपने विद्यार्थियों को स्पर्श, गन्ध, दृश्य वगैरह अलग–अलग तरीकों से सीखने में सहायता कर सकते हैं। जैसे : फूलों के प्रकार सीखने के लिए बगीचे की सैर का आयोजन कर सकते हैं। वहाँ तरह–तरह के फूल देख सकते हैं। छू सकते हैं–उनकी गन्ध ले सकते हैं। ऐसा करने से बच्चों को सभी जानकारी अच्छी तरह याद रहेगी।

हाथ की स्वच्छता की चर्चा के वक्त हाथ धोने की क्रिया को सही तरह से कर के दिखाने से ज़्यादा लाभ होगा।

- बच्चे सीखने के तौर–तरीकों में शामिल होना पसन्द करते हैं। लड़के–लड़की में समानता को अभिनय या चरित्र का किरदार पेश कर अच्छी तरह दर्शाया जा सकता है जैसे "आम का बँटवारा (भाग)" में राजू और मीना एक दिन के लिए अपने–अपने काम की अदला–बदली करते हैं।
- सीखने में रुचि बढ़ाने के लिए चित्र बनवाएँ। इससे कल्पना–शक्ति का भी विकास होता है। जैसेः प्रसारित रेडियो कायक्रम में उन्हें जो चीज़ पसन्द आयी–उसका चित्र बनाएँ (उदाहरणार्थः मुद्दे–जैसे मित्रता, बाल–मज़दूरी, स्वच्छ पानी वगैरह)।
- कक्षा को समूह कार्य के लिए दलों मे बाँटें और उन्हें अपना कार्य सबके सामने प्रस्तुत करने के लिए कहें। समूह कार्य में ए. एन. एम. (ANM) दीदी से एनीमिया के सन्दर्भ में मुलाकात, ए. डब्ल्यू. डब्ल्यू (AWW) से मुलाकात कराएँ ताकि स्कूल के पूर्व की जानकारी या बच्चे का वज़न करना क्यों ज़रूरी है ये पता चले या फिर स्थानीय पंचायत समिति के अधिकार या बाल–मज़दूरी के कानून की जानकारी हासिल की जा सके।

ध्यान रहे

हम जो सुनते हैं उसका 20%
हम जो देखते हैं उसका 40%
और हम जो खुद करते हैं–
खुद ढूंढते हैं उसका 80%
ही हमें याद रहता है

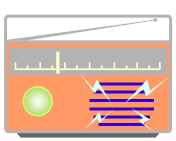

शिक्षकों को सुझाव

अपने विद्यार्थियों से उस भाषा में बात करें जिस भाषा को वे अच्छी तरह आसानी से समझ सकते हैं। शब्द, उदाहरण और परिस्थितियाँ वही बताएँ जिनसे वे परिचित हैं।

उनके देश, समाज और आसपास की दुनिया से सम्बन्धित मुद्दों में उन्हें भी शरीक होने का मौका दें। उदाहरणार्थः उन्हें समझाएँ कि नल या हैण्ड–पम्प ठीक से बन्द करें, पानी क्यों बचाना चाहिए? उन्हें ये जानकारी लेने दीजिए कि पानी की कमी से हमारे देश को किन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा–दूसरे देशों का भी क्या हाल होगा?

आपको इस सत्य को मानकर ही चलना पड़ेगा कि विद्यार्थी अलग–अलग पृष्ठभूमि से आते हैं और उनकी धारणाएँ, व्यवहार, मनोवृत्ति, झुकाव, रुझान और पूर्वाग्रह की वजह से शिक्षा को ग्रहण करने की क्षमता का स्तर भी अलग–अलग होगा। एक शिक्षक होने के नाते आप उनके अनुभवों को सँवार कर उसमें सहनशीलता, सहिष्णुता की भावना जोड़ सकते हैं। जैसेः दूसरे धर्मों के प्रति आदर रखना और उन्हें स्वीकृति देना। आप विभिन्न धर्मों के त्यौहार, रीत–रिवाज़, तौर तरीके व खान–पान की चर्चा कर सकते हैं।

आपको विद्यार्थियों में स्वीकृति (आदर) पाने के लिए यह ज़रूरी है कि आपसे मिलना, आपसे बात कर पाना उनके लिए सरल हो, सहज हो। आपके बीच तालमेल सही हो। इससे आप उनकी खूबियों और कमज़ोरियों को पहचान पाएंगे कि उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए क्या करना चाहिए।

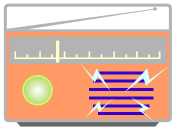

उदाहरणार्थ: मीना की शिक्षिका को सब चाहते हैं–उनका आदर करते हैं क्योंकि वो उनकी बात सुनती हैं–उनके व्यक्तित्व को विकसित होने का मौका देती है पर राजू की शिक्षिका, जो सख़्ती से पेश आती है वो ऐसी नहीं है।

विद्यार्थियों को कक्षा में पढ़ाते वक्त और उनसे बातचीत व क्रियाकलाप के वक्त आप लड़के व लड़की में समानता के मुद्दे को हमेशा बढ़ावा देते रहें, जैसेः "खेल–कूद और गणित में लड़के, लड़कियों से बेहतर हैं" बोलचाल में ऐसे वाक्यों का प्रयोग न करें।

शिक्षा सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। रेडियो कार्यक्रम बन्द होते ही शिक्षा बन्द–ऐसा न हो–इसका ध्यान रखें।

पूर्वावलोकन और पुनरावृत्ति के लिए गतिविधियों का सुझाव

शिक्षक की हैसियत से आपकी यहाँ विशेष भूमिका है–आपको यह सुनिश्चित करना है कि मीना मंच की साप्ताहिक गोष्ठी में कार्यक्रम में प्रस्तुत मुद्दों को उठाया जाए। इन्हीं मुद्दों को दूसरे विद्यार्थियों, मित्रों और अभिभावकों तक पहुँचाने के लिए नए–नए तरीके ढूंढे।

मीना मंच से जुड़े सभी बच्चों को ये कहानी सुनानी होगी और इन बच्चों को उन प्रवृत्तियों, खेल, नाट्यात्मक चरित्र चित्रण वगैरह में भी शामिल करना होगा जिसे उन्होंने कक्षा में सीखा है।

मीना मंच को बढ़ावा देने के लिए अच्छा काम करने वाले विद्यार्थी या शिक्षक का नाम आप विशेष प्रमाण–पत्र के लिए भी सुझा सकते हैं।

1. परिवार में कहानी दोहराने के बाद के अनुभव को वर्ग में बच्चों के साथ बाँटें

रोज़ की दिनचर्या की तरह मीना की कहानी परिवार में सुनाने व उसमें दर्शाए मुद्दों पर चर्चा करने के लिए आपने बच्चों को तैयार कर दिया है। अब इसके बाद दूसरे चरण में उनके परिवार वालों की प्रतिक्रिया–"उन्होंने क्या कहा?" इसे अपनी कक्षा में सभी को बताएँ। इस तरह आपस में अनुभव का लेन–देन काफ़ी रोमांचक होगा तथा इसमें आनन्द आएगा।

2. आपकी (शिक्षक की) सहायता से जानकारी प्राप्त करने की गतिविधियों की शुरुआत जैसे

समूह कार्य के दौरान विद्यार्थी एक दूसरे से कुछ न कुछ सीख पाएंगे, उनमें नेतृत्व के गुण विकसित होंगे और नए विद्यार्थियों के लिए वे आदर्श बन पाएंगे।

विद्यार्थियों को छोटे–छोटे समूह में विभाजित करें और उन्हें गाँव का नक्शा बनाने के लिए कहें। उद्देश्य ये है कि स्वास्थ्य सम्बन्धित मुद्दे जैसे पानी और स्वच्छता की व्यवस्था जैसे शौचालय, नल या तालाब इस गाँव में कहाँ है वो नक्शे में दर्शाएँ। तथा प्रत्येक बच्चा अपने–अपने घर का नक्शा बनाकर उसमें पानी का नल और साबुन कहाँ रखा है वो दर्शाएँ।

साबुन के इस्तेमाल सम्बन्धी यह कार्य दो प्रकार से किया जा सकता है:

अ) जाँच पड़ताल करें कि खाने से पहले या शौच के बाद लोग साबुन से हाथ क्यों नहीं धोते? कारण ढूंढ निकालने के लिए घर–घर जाकर पूछताछ करें। मिली हुई जानकारी का विश्लेषण करने पर कई कारण सामने आएंगे। जैसे:

- गाँव में साबुन ही नहीं मिलता
- शौचालय और नल (या बाल्टी) में दूरी बहुत है

कुछ लोगों के घरों में शौचालय न होने की वजह से शौच के लिए खेत या मैदान में दूर तक जाना पड़ता है, उतनी दूर साबुन और पानी ले जाना कठिन है।

ब) जो विद्यार्थी गणित और अंकों के अच्छे जानकार हैं या उनमें रुचि रखते हैं उन्हें चाहिए कि वे इस उपलब्ध जानकारी के आँकड़े इकट्ठा करें और उससे औसत/प्रतिशत निकालें। जैसे:

- कितने प्रतिशत घरों में शौचालय नहीं हैं?
- कितने प्रतिशत लोग साबुन इस्तेमाल नहीं करते?
- कितने प्रतिशत लोग खाने के पहले और शौचालय के बाद साबुन और पानी का प्रयोग करते हैं।

ये कार्य अनूठे भी हैं और मज़ेदार भी

- आपके गाँव में आवश्यक सरकारी सुविधाएँ जैसे पंचायत, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, स्कूल कहाँ उपलब्ध हैं? ढूंढ निकालें।
- आपके गाँव में कितने हैण्ड पम्प हैं? कितने घर इस हैण्ड पम्प के स्वच्छ पानी का उपयोग करते हैं?
- कितने बच्चों का टीकाकरण हो चुका है? कितने और बच्चों का टीकाकरण बाकी है?

अभिभावक और समाज के साथ पुनरावृत्ति व पूर्वावलोकन के लिए करने योग्य कार्यों का सुझाव

- अभिभावक–शिक्षक संगठन (PTA) की सभा में आप अभिभावकों के साथ मीना के रेडियो कार्यक्रम के मुद्दों पर चर्चा कर सकते हैं (विशेषकर जब बच्चे भी उन्हें मीना की कहानी की जानकारी देते रहते हैं)।
- अभिभावक–शिक्षक संगठन (PTA) की सभा में बच्चों को मीना के मुद्दों और सन्देश पर संवाद, अभिनय या गीत गाने का मौका देकर अभिभावकों को भी कार्यक्रम में जुड़ने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।
- अभिभावकों को भी स्कूल कार्यक्रमों के दौरान ज़िम्मेदारी लेने के लिए कार्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। जैसेः इनाम वितरण दिवस, नाटक या फिर विशेष दिवस जैसे "मीना दिवस" "भाई–बहन दिवस" के दौरान वे लड़का–लड़की में समानता को बढ़ावा दे सकते हैं। "दादा–दादी दिवस" या "नाना–नानी दिवस" भी मनाया जा सकता है जसमें दादा–दादी, नाना–नानी को भी कार्यक्रम से जोड़ा जा सकता है।
- आप सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन भी कर सकते हैं। जैसेः टीकाकरण, प्रौढ़ शिक्षा वगैरह। जिसमें अभिभावक (माँ–बाप) समाज के सदस्य और अन्य समूह जैसे रेडियो श्रोता संघ, स्वयंसेवा दल, मीना मंच की माताओं को भी कार्यक्रम में शामिल कर सकते हैं।
- मीना रेडियो कार्यक्रम को और इससे जुड़ी समाज और अभिभावकों की प्रवृत्तियों को (जैसेः जानकारी बढ़ाने के लिए तय कार्यक्रमों द्वारा) बढ़ावा देने में "ग्राम शिक्षा समिति" (VEC) का योगदान भी महत्त्वपूर्ण साबित हो सकता है। उनके द्वारा इन सभी घटकों को मिलकर काम करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

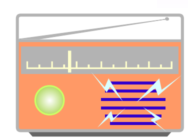

☞ रेडियो कार्यक्रम के विषय को लेकर ग्राम पंचायत समिति की मदद से आप स्थानीय अभियान चला सकते हैं। जैसेः स्वास्थ्य, सुरक्षा विभाग या सफ़ाई विभाग द्वारा मीना कार्यक्रम को बढ़ावा दिया जा सकता है जिसमें स्कूल के बच्चों द्वारा आस–पास के परिसर की सफ़ाई की जा सकती है या फिर पूरी बस्ती में स्वच्छता और साफ़–सफ़ाई की जानकारी देने का कार्यक्रम बनाया जा सकता है।

☞ मीना के मुद्दों और सन्देश की जानकारी देने के लिए "बालमित्र पंचायत" का गठन भी एक तरीका है।

☞ मीना मंच, किशोरी बालिका संगठन, युवा मंच वगैरह संस्थाएँ नुक्कड़ नाटक, स्नेह मिलन, प्रीति भोज वगैरह कार्यक्रमों के आयोजन की ज़िम्मेदारी ले सकते हैं जिनमें स्थानीय नेताओं को भी (शामिल) किया जा सकता है। जैसेः वृक्षारोपण कार्यक्रम जिसमें "पेड़ बचाओ" अभियान शुरू किया जा सकता है।

☞ मीना मंच के सदस्य घर–घर जाकर मीना के प्रसारित कार्यक्रम की बातें बता सकते हैं। इस कहानी में से दृष्टांत (उदाहरण) देकर लोगों के सन्देह दूर कर सकते हैं, सन्देश पहुँचा सकते हैं उदाहरण के लिए यदि अभिभावक चाहते हैं कि लड़कियाँ स्कूल जाने की बजाय खेत में मदद करें तो ऐसे वक्त उन्हें क्या पर्याय सुझाया जाय कि लड़की की स्कूली शिक्षा बन्द न हो जाए।

☞ मीना मंच द्वारा "मोहल्ला कमेटी" की सभाओं में भी मीना रेडियो कार्यक्रम की जानकारी दी जाए और उन्हें कार्यक्रम सुनने के लिए प्रेरित किया जाए ताकि मुद्दे और सन्देश उन तक पहुँचे और समस्याओं को सुलझाने का एक और मौका मिले।

ध्यान रखें (याद रखें)

- ★ एक शिक्षक की हैसियत से मीना रेडियो कार्यक्रम के दौरान आपकी भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है।
- ★ आपके योगदान से ही बच्चे नई–नई बातें सीख सकेंगे अर्थात् कार्यक्रम के सफ़लता की चाबी आपके हाथ में है।
- ★ मीना कार्यक्रम लड़के और लड़कियाँ–दोनों के लिए है। प्रसारित कार्यक्रम से सबक, शिक्षा, चेतावनी, महत्त्वपूर्ण जानकारी लड़के और लड़की–दोनों को मिलती है।
- ★ लड़कियों की समस्याओं, उनके मुद्दों के प्रति लड़कों को भी संवेदनशील बनाना आवश्यक है, उनके प्रति आदर भाव का होना भी ज़रूरी है। मीना रेडियो कार्यक्रम द्वारा लड़कों को कच्ची उम्र से ही इन मुद्दों के प्रति जागरूक होने का अवसर मिलता है।
- ★ अभिभावकों और समाज के सदस्यों को मीना रेडियो कार्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने का काम कर, आप एक नेक काम का नेतृत्व करते हैं और बदलाव के लिए स्वस्थ वातावरण तैयार करने में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।

शिक्षा द्वारा विकसित किये जाने वाले आवश्यक जीवन कौशल

जीवन कौशल–

सृजनात्मक विचार (सोच)–कुछ बच्चे पुराने घिसे–पिटे तरीकों की बजाय लीक से हटकर अपनी सूझ–बूझ से नए तरीकों से समस्या सुलझाते हैं जैसेः कक्षा में शिक्षक ने जो पढ़ाया उसे सीखने के लिए मीना मिट्ठू की मदद लेती है और इस तरह वह मुर्गीचोर को पकड़ने में कामयाब होती है।

समालोचनात्मक सोचः समस्या या अनुभव का विश्लेषण कर उसे समझकर वास्तविकता के धरातल पर सुलझाना।

तनाव और भावनाओं पर नियंत्रण रखना– तनाव की वजह ढूंढ निकालना–इसकी वजह से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ रहा है ये जान लेना और इस पर कैसे नियंत्रण पाना है, इस कला में बच्चे निपुणता हासिल कर सकते हैं।

निर्णय लेने की कला– विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा विद्यार्थी किसी समस्या के कई हल ढूंढ निकालता है और फिर समस्या सुलझाने के लिए सबसे उत्तम और उपयुक्त हल का चयन करता है।

प्रभावशाली संवाद– शरीर की भाषा और शब्दों (बोलचाल) की भाषा का सही उपयोग कर अपनी अभिव्यक्ति में निपुणता हासिल कर प्रभावशाली संवाद में विद्यार्थी सफल बनेगा।

सहिष्णुता (सहानुभूति–परानुभूति)– दूसरे व्यक्ति की समस्या और परिस्थिति को अपनी कल्पनाशक्ति से समझने की शक्ति इससे मिलती है जिसकी वजह से दूसरे व्यक्ति को, जो आपसे बिल्कुल भिन्न (अलग) है, उसे भी आसानी से स्वीकार कर पाने में सुविधा (आसानी) होती है।

आपसी सम्बन्ध– इस कला से बच्चे ये समझ लेते हैं कि दूसरा व्यक्ति इस परिस्थिति (माहौल) में कैसा व्यवहार करेगा। इससे उनकी मित्रता में दरार नहीं पड़ती।

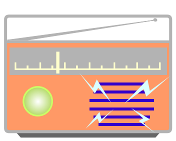

मोलतोल कर पाना– इससे विरोध को सहने, सुलझाने व दूसरों से तालमेल बनाने में सहायता मिलती है। कुछ पाने और कुछ खोने की नीति से समस्या को सुलझाना आसान हो जाता है।

समस्या सुलझाना– कठिन परिस्थिति में बच्चे कई रुकावटें, एक के बाद एक पार करने के लिए सबसे बेहतर हल का चुनाव कर, उस हल के अनुरूप (अनुसार) क्रिया कर, कठिन परिस्थिति से सफलतापूर्वक बाहर निकल आते हैं, समस्या सुलझा लेते हैं।

स्वयं को जानना– इससे बच्चो को खुद की सही समझ हो जाती है। खुद का स्वभाव, चरित्र, खूबियाँ, कमियाँ, पसन्द–नापसन्द सबकी जानकारी हो जाती है।

रेडियो प्रसारण के उपरान्त की जाने वाली गतिविधियाँ।

निर्देशः प्रसारण के उपरान्त की जा सकने वाली कुछ गतिविधियाँ व कहानियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं जिनका उदाहरण लेते हुए शिक्षक अपनी रणनीतियों या गतिविधियों का निर्माण कर सकते हैं।

सामाजिक पहचान

क्रियाकलाप

प्रतिभागी गोले में खड़े होंगे और सुगमकर्ता उनसे विभिन्न प्रश्न करेगी। प्रश्न का उत्तर हाँ होने पर उत्तर देने वाला प्रतिभागी गोले के अन्दर कूदकर आ जाता है। अन्त में इन प्रश्नों पर परिचर्चा की जा सकती है।

प्रश्नों के प्रकार

i) किनके–किनके छोटे भाई/बहन हैं?

ii) बीमार होने पर इलाज कराने कौन–कौन डॉक्टर के यहाँ जाते हैं?

iii) किस–किस के घर में भाई–बहन दोनों ही घर के कामों में हाथ बँटाते हैं?

iv) कौन–कौन गाँव से बाहर घूमने गया है/रेलयात्रा की है?

v) कौन–कौन घर से अकेले स्कूल आती/जाती है?

vi) किस के घर के अन्दर शौचालय बना हुआ है?

vii) कौन–कौन घर में खाना पकाकर/घर का काम करके विद्यालय आया है?

कम उम्र में विवाह

i) विवाह की कानूनी उम्र क्या है उसका क्या महत्त्व है?

ii) यदि कम उम्र में विवाह कर दिया जाए तो उसकी क्या हानियाँ हो सकती हैं?

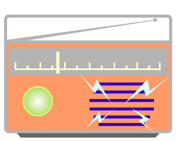

कम उम्र मे विवाह

विवाह एक सामाजिक रस्म है जिसमें बन्धकर स्त्री–पुरुष पति–पत्नी की भूमिका निभाते हैं। वे अपने परिवार की संरचना करते हैं और गृहस्थी के खर्च, बच्चों के लालन–पालन, बड़ों की देखभाल आदि का दायित्व उठाते हैं।

हमारे देश में विवाह से सम्बन्धित एक कानून जिसके अन्तर्गत विवाह के समय लड़की की आयु कम से कम 18 वर्ष और लड़के की आयु कम से कम 21 वर्ष की होनी चाहिए। इस कानूनी उम्र का औचित्य यह है कि विवाह हो जब लड़का–लड़की दोनों परिपक्व होकर विवाह सम्बन्धी अपनी भूमिका निभाने के लिए सक्षम हो जो विवाह की कानूनी उम्र से पहले के वर्ष लड़के–लड़कियों के लिए पढ़ाई करने, कोई हुनर सीखने, और व्यक्तित्व निखारने और अच्छे–बुरे की पहचान सीखने के लिए होते हैं।

फिर भी बहुत से लोग इस कानून का उल्लंघन करके लड़के–लड़कियों का कम उम्र में विवाह करते हैं। ऐसी स्थिति में उन दोनों को बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कम उम्र के पति–पत्नी वैवाहिक जीवन की ज़िम्मेदारियों के बोझ से दब से जाते हैं।

कम उम्र के पति–पत्नी को कई प्रकार की मानसिक समस्याएँ होती हैं जैसे:

व्यवहारिक बुद्धि की कमी: विवाह के प्रति दायित्वों को पूरा करने के लिए लड़का–लड़की मानसिक रूप से कम तैयार होते हैं। व्यवहारिक बुद्धि व अनुभवों की कमी होने के कारण उन्हें अपनी और बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करने में बहुत कठिनाई व परेशानी झेलनी पड़ती है।

क्षमता की कमी: उनकी क्षमता का पूर्ण विकास नहीं हो पाता। उनकी पढ़ाई–लिखाई भी पूरी नहीं हो पाती है जिससे उनका एवं उनके बच्चों का भविष्य अंधकारमय हो जाता है। लड़के पर धन कमाने, और पत्नी व बच्चों का दायित्व आ जाता है तो लड़की पर गृहस्थी चलाने का बच्चों को जन्म देने और उन्हें पालने पोसने का।

इन सब कारणों से पति–पत्नी को समय से पहले ही बुढ़ापा आ जाता है।

यदि कानूनी उम्र पार करके लड़के–लड़की का विवाह हो तो इससे उन्हें निम्नलिखित लाभ होंगे

- वे अपनी पढ़ाई पूरी कर सकते हैं
- उनके लिए रोज़गार सम्बन्धी विकल्प बढ़ जाएंगे
- वे परिवार चलाने के लिए परिपक्व हो जाते हैं तथा सही निर्णय ले सकते हैं
- वे अपने पति/पत्नी व ससुराल वालों से मधुर रिश्ते बनाने के लिए भावनात्मक रूप से तैयार हो जाएंगे
- किशोरी कम उम्र में माँ बनने के खतरों से बच जाती है

बाल विवाह/कम उम्र में विवाह–नसीमा और असलम की कहानी

चेतना–लखनऊ जिले का एक ग्राम गद्दी खेड़ा हैं जिसमें अधिकांश आबादी गद्दी जाति (मुस्लिम वर्ग) की ही है। इस जाति विशेष में काफी समय से बाल–विवाह की कुप्रथा प्रचलित थी। यहाँ तक कि संरक्षक गण बच्चे के जन्म के पूर्व ही विवाह तय कर लेते थे। संयोग से यदि विपरीत लिंग में बच्चों का जन्म होता था तो दो चार साल बाद बच्चों को गोद में लेकर शादी करा देते थे और यदि कोई संरक्षक विरोध करता तो उसको समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता था। इन बाल विवाहों से अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती थी जैसे अगर अल्पायु में मृत्यु हो जायें तो दूसरे साथी की विवाह होने में काफी अड़चन होती थी। धीरे–धीरे शिक्षा के प्रचार–प्रसार के बाद लोगों में जागरूकता आई और लोगों ने इस कुप्रथा के खिलाफ़ आवाज़ उठायी जिसकी अगुवाई श्रीमती नसीमा ने की।

नसीमा का विवाह उसके माता–पिता ने 3 वर्ष की आयु में ही 4 वर्षीय असलम से कर दिया था और 14 वर्ष की अवस्था में उसका गौना भी हो गया। उसके एक वर्ष बाद उसने एक अपरिपक्व बच्ची को जन्म दिया। बच्ची की जान बचाने के लिए काफी इलाज करवाना पड़ा और घर की ज़मीन गिरवी हो गई। ज़मीन के न रहने पर परिवार में आय का स्रोत बन्द हो गया जिससे परिवार आर्थिक कठिनाइयों से गुज़रने लगा। नसीमा ने भी अस्वस्थ होकर खाट पकड़ ली। असलम रात दिन कठिन श्रम करके किसी प्रकार परिवार की रोटी जुटा पाता था। वह बहुत उदास रहने लगा क्योंकि इस छोटी उम्र में ही उस पर बहुत बोझ पड़ गया और उसके सब सपने चूर हो गये। वह तो पढ़ लिखकर इंजीनियर बनना चाहता था। वह सोचने लगा उसे इतनी जल्दी गौने के लिए तैयार नहीं होना चाहिए था। एक दिन परेशान होकर वह घर से निकला और कभी वापस ही नहीं आया इन सभी दुःखों का कारण नसीमा को मानकर उसके सास–ससुर ने घर से निकाल दिया। बेसहारा होने पर वह अपने माता–पिता के घर वापस आ गई। पहले से ही नौ बच्चों के परिवार के बोझ से दबे माता–पिता के ऊपर तो मानो विपत्ति का पहाड़ ही टूट पड़ा परन्तु फिर भी नसीमा को सहारा दिया। नसीमा भी परिवार के सहारे के लिए खेतों में कठिन परिश्रम करती रहीं तथा खाली समय में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में पढ़ती थी। धीरे–धीरे उसने व्यक्तिगत रूप से हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त कर ली और गाँव के लोगों को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया और सबको बाल–विवाह से होने वाले दुष्प्रभावों को समझाया। पहले तो लोगों ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया परन्तु धीरे–धीरे उन्हें यह बात समझ आने लगी कि बच्चों को पढ़ाना चाहिए और बेटी की शादी 18 वर्ष के बाद और बेटों की शादी 21 वर्ष के बाद ही करनी चाहिए।

आज तो कोई संरक्षक जब तक लड़का कुछ कमाने लायक नहीं होता है वह उसके विवाह के लिये तैयार नहीं होते हैं, और 18 वर्ष से पहले लड़की की शादी नहीं करते हैं। जिससे गाँव के नवयुवक–नवयुवती खुशहाल हो गये हैं।

दो किशोरियों के जीवन की कहानी–रमा की कहानी

रमा एक गाँव में अपने माता–पिता और छः भाई–बहनों के साथ रहती थी। रमा बचपन से ही अपने माता–पिता से सुनती आई थी जब वह 14–15 वर्ष की होगी, तो वे उसकी शादी कर देंगे। इसलिए उसे खाना बनाने और छोटे भाई–बहनों की देखभाल करने में माँ की मदद करनी चाहिए, वह ऐसा ही करती थीं। इससे भी अलग कुछ जीवन हो सकता है, ऐसा उसने कभी सोचा ही नहीं था। अब उसकी शादी हो चुकी है और 16 वर्ष की उम्र में उसके दो जुड़वाँ बच्चे हैं। उसका पति एक मछुआरा है जिसकी आमदनी में रमा और उसके दो बच्चों का गुज़ारा मुश्किल से होता है। रमा इस तरह का जीवन बसर नहीं करना चाहती लेकिन वह यह नहीं जानती कि वह अपने जीवन को बेहतर कैसे बनाए।

रशीदा की कहानी

रमा की सहेली, रशीदा उसी गाँव में अपने माता–पिता और चार भाई–बहनों के साथ रहती थी। रशीदा अपनी अध्यापिका को अपना आदर्श मानती थी और उन की तरह शिक्षक बनना चाहती थी। रशीदा ने बहुत मेहनत की और कठिनाइयों के बावजूद उसने अच्छे अंक प्राप्त किये। उसके माता–पिता नहीं चाहते थे कि वह पढ़ाई जारी रखे। वे चाहते थे कि वह केवल घर के कामकाज करें। लेकिन उसने अपने माता–पिता को अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए राज़ी करने के तरीके ढूंढ लिये। पहले उसने अपनी एक बुआ से बात की जिनकी राय को उसके परिवार द्वारा महत्व दिया जाता था। उसकी बुआ ने उसके माता–पिता से बात की और उन्हें लड़की की पढ़ाई का महत्व समझाया। दूसरा, स्कूल से लौटने के बाद वह घर के काम भी जल्दी से निपटा लेती और फिर शाम

को देर तक पढ़ाई करती। 21 वर्ष की आयु में उसकी शादी हुई। अब वह उसी स्कूल में शिक्षक है जिसमें वह पढ़ा करती थी और आज सभी उसे बहुत सम्मान देते हैं।

सभी किशोर–किशोरियों का उद्देश्य निश्चयात्मक व्यवहार को विकसित करना होता। लेकिन इसमें अनेक कठिनाई आती हैं और हम प्रायः निश्क्रिय (दब्बू) अथवा आक्रामक (उग्र) व्यवहारों की ओर मुड़ जाते हैं। सफलतापूर्ण निश्चयात्मक व्यवहार को विकसित करने में समय, अभ्यास और धैर्य की ज़रूरत होती है परन्तु इसका प्रभाव बहुत अच्छा होता है।

निश्चयात्मक व्यवहार वाले लोग

- ईमानदारी से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं।
- उसके लिए सार्थक कोशिश करते हैं जो उन्हें चाहिए।
- वे औरों को जानबूझ कर नुकसान/हानि नहीं पहुँचाते हैं।
- औरों को अपना उद्देश्य पाने की छूट देते हैं।
- खुद की इज्जत करते हैं तथा औरों को इज्जत देते हैं।
- जो स्वयं को नापसंद है उसे दूसरों के लिए पसंद न करे।

उनकी सोच होती है, "मैं ठीक हूँ–और आप भी ठीक हो।"

दृढ़ निश्चय के साथ अपनी भावनाएँ कैसे प्रकट करें:

- आप कैसा महसूस करते हैं, यह स्पष्ट रूप से कहें।
- जब किसी विषय पर बात करें तो उसका तर्कपूर्ण पक्ष रखें।
- अपनी ज़रूरतों के बारे में स्पष्ट कहें साथ ही दूसरों की भावनाओं का भी ध्यान रखें।